वर्ष 22 अंक 02
27 अप्रैल 2024
एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367
पोस्ट दिनांक 30 अप्रैल 2024

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-24
पृष्ठ संख्या 28
एक प्रति 20.00 रु

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

।। ओ३म्।।

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 22 अंक 02

अप्रैल - 2024

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,123

विक्रम संवत् 2081

दयानन्दाब्द 199

सलाहकार मण्डल

श्री ललित नागर

पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री प्रकाश आर्य

कार्यालय फोन : 0755-4220549

सम्पादक

अतुल वर्मा

फोन : 07324-226566

सह सम्पादक

श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता

एक प्रति .... ₹ 20,00

वार्षिक .... ₹ 300,00

आजीवन .... ₹ 2000,00

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 .... ₹ 500

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) .... ₹ 400

आधा पृष्ठ (अन्दर का) .... ₹ 250

चौथाई पृष्ठ .... ₹ 150

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय — 04
- मानव जीवन के लिये मुख्य सन्देश.. — 06
- ईश्वर की व्यवस्था — 08
- सन्यासी — 10
- मुझ-सा बुरा न कोयं — 11
- भारतीय परम्परा से दूर होते लोग .. — 14
- एक शिक्षादायक घटना — 18
- महर्षि दयानंद और आर्य समाज के संबंध में प्रमुख व्यक्तियों, विचारकों की सम्मतियां — 19
- प्रचार – प्रसार — 22
- महर्षि दयानंद कन्या गुरुकुल मोहन बड़ोदिया द्वारा सराहनीय प्रचार कार्य — 23
- अन्नपूर्णा योजना के सहयोगी महानुभाव — 25
- आर्य वीरांगना शिविर — 26

सम्पादकीय :

चिन्तन हेतु सोच का अभाव

आज की सामाजिक स्थिति ने व्यक्ति से विश्व तक बुरी तरह से प्रभावित कर रखा हैं। अपनी व्यक्तिगत व पारिवारिक समस्याओं से जूझता व्यक्ति अब सामाजिक व राष्ट्रीय अनेक कारणों से भी परेशान हैं।

मानवता का मापदण्ड इतना मन्द हो गया है जिस पर इतनी धूल जमा हो गई जिसने उसके स्वरूप को आच्छादित कर दिया। इसका ही परिणाम आज हमस ब भोग रहे हैं। यह स्थिति निरंतर बढ़ती जा रही है यदि इस पर नियन्त्रण नहीं किया तो यह और भयावह होगी इसमें कोई सन्देह नहीं।

दुःख, चिन्ता, रूग्णता, असुरक्षा, परेशानी, अराजकता, आर्थिक समस्यायें, सामाजिक और राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हो रहा हैं। इतना अवश्य है कि इन सबसे सबको सीधे सीधे परेशानियों का सम्बन्ध नहीं है इसलिए इनके प्रति कोई विचार नहीं, कोई प्रतिक्रिया नहीं, कोई विरोधात्मक ठोस योजना नहीं।

मनुष्यता के स्तर गिरने की पतन की पराकाष्ठा होती जा रही हैं। एक समय था जब इस देश के महान प्रतापी राजा अश्वपती अपने राज्य की पवित्रता, ईमानदारी, नैतिकता, के लिए शपथ लेकर आश्वस्त करते थे कि उनके राज्य में कोई अनैतिक, अव्यवहारिक, निन्दनीय कृत्य करने वाला कोई नहीं हैं।

आज हम कहां खड़े है ? ऐसा कौनसा दोष, अनैतिकता बची जिसे समाज ने छोड़ दिया ? अब बद से बदतर स्थिति हो गई जिसे और कहां तक पहुंचना है यह कल्पना के बाहर हैं। शरीर में छोटी से छोटी रूग्णता हो जावे तो उसे शीघ्र उपचार कर ठीक कर लिया जाता हैं। यह तत्परता इसलिए की जाती है ताकि वह आगे बढ़ ना जावे। क्योकि हम समझते है लापरवाही में छोटी सी बिमारी को अनदेखा किया जाना किसी बड़ी बिमारी को निमंत्रण देना होता हैं।

यही व्यवहार हम व्यक्तिगत हित के लिए अन्य कारणों से होने वाली संभावित क्षति की रोकथाम के लिए भी करते हैं। किन्तु अपने से जिस बात का सीधा सम्बन्ध नहीं है उन पर हम नहीं सोचते। मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता हैं। किसी परिवार से जुड़े सम्बन्ध को पारिवारिक कहा जाता है ठीक इसी प्रकार समाज से जुड़े सदस्य को सामाजिक कहा जाता हैं। इसी प्रकार समाज हमारा परिवार है, राष्ट्र भी हमारा है हम इन दोनों के सदस्य है। एक सदस्य होने के नाते इनके हितैषी, रक्षक, सहयोगी होना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है मानवीय धर्म हैं। यदि यह नहीं होता तो हमें "सर्वे भवन्तु सुखिनः" वसुदैव

कुटुम्बकम'' ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' के उदघोष लगा कर सबके मंगल की कामनां क्यों करते हैं ? इसीलिए कि हम सब जाति, भाषा, देश सम्प्रदाय ईश्वर, धर्म के नाम पर भले ही बटे हो किन्तु समस्त मानव समाज के एक सदस्य है कोई इसे माने ना माने पर सत्य तो यही हैं।

आज इस भावना और व्यवहार का अभाव है यही कारण है हम अपने इस समाज की समस्याओं परेशानियों को अपनी नहीं समझ रहे है और अनदेखा कर रहे हैं।

हम समाज या राष्ट्र से प्राप्त होने वाले किसी भी प्रकार के सहयोग को प्राप्त करने में तत्पर रहते है अधिक से अधिक प्राप्त हो इस प्रकार की अपेक्षा रखते हैं। इस सहयोग को हम अपना अधिकार मानते हुए संधर्ष करके भी प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु समाज या राष्ट्र को हमसे जो अपेक्षा है उसकी हम उपेक्षा कर रहे हैं।

इनमें निरन्तर फैल रही समस्याओं, बुराइयों, परेशानियों, क्षतियो, या अन्य कारणों के प्रति हमारी सोच नकारात्मक होती है, उसे अनदेखा किया जाता हैं। समाज हो या देश इनके सामने आने वाले संकटो का कोई प्रभाव सीधे सीधे हम अपने से नहीं समझते। इनकी परेशानी हमारी नहीं है इसका निदान करने वाले तो कुछ नेता, या पदाधिकारी शासकीय अधिकारी हैं यह सोचते हैं।

हम भूल गए की समाज हमारा, राष्ट्र हमारा है और हम इसके सदस्य हैं। एक सदस्य होने के कारण इनके प्रति हमारे भी कर्तव्य हैं। इनकी समस्या हमारी समस्या इनकी क्षति हमारी क्षति है यह सुरक्षित है तो हम सुरक्षित है इन सबके लिए हमें व्यक्तिगत व पारिवारिक रूप से इनके साथ खड़ा होना चाहिए इनका सहयोगी बनना चाहिए।

किन्तु कर्तव्य की इस भावना से समाज भटक रहा हैं। स्वार्थ की प्रवृत्ति चरम सीमा पर हैं। अपने व्यक्तिगत या पारिवारिक लाभ प्राप्ति के लिए वह किसी को भी बड़ी से बड़ी क्षति पहुंचा सकता हैं। आज यही हो रहा है समाज अथवा राष्ट्र के सहयोगी बनना तो दूर निज स्वार्थ हेतु इनको लूट रहे है, अव्यवस्था फैला रहे है अपने कार्यो से राष्ट्र को कमजोर कर रहे हैं। इसका प्रभाव प्रत्येक पर प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से हो रहा हैं। ठोस धातु लोहा, पीतल, ताबा, आदि के किसी भी हिस्से पर आग का प्रभाव हो वह पूरे हिस्से को प्रभावित करता हैं। यही स्थिति वर्तमान में परिलक्षित हो रही हैं।

किन्तु यह सब क्यों हो रहा है इस पर विचार किया जावे तो सामने यह तथ्य आता है कि अराजकता अशान्ति अव्यवस्था फैलाने वालों की संख्या बहुत कम हैं समस्त मानव समूह की संख्या की तुलना में नगण्य सी हैं। इसके विपरीत इनके अत्याचारों से पीड़ित संख्या बहुत अधिक हैं। फिर यह स्थिति क्यों ? बहु संख्यक समाज इन पर नियन्त्रण क्यो नहीं कर पा रहा ?

इसका मुख्य कारण है हमारी सोच, जिसमें मनुष्यता के मानदण्डों की कमी, घट रही नैतिकता, समाज, राष्ट्र या विश्व धर्म की उपेक्षा। इन सबसे अलग पशुवत स्वार्थ प्रवृत्ति में लिप्त मानसिकता जिसके पास अपने अतिरिक्त किसी और दिशा में चिन्तन हेतु सोच का अभाव है, यह कमजोरी समाज के लिए धातक हैं।

मानव जीवन के लिये मुख्य सन्देश सन्मार्ग व परोपकार

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः।
मान्तः स्थुनो अरातयः।। अथर्व. 13 । 1 । 59

हे इन्द्र सब शत्रुओं का विद्रावण करने वाले प्रभो हम मार्ग से कभी विचलित न हों। मार्ग भ्रष्ट होकर आपसे दूर न हो जावें, अपने सौम्य का रक्षण करने वाले यज्ञ से देवपूजा, संगतिकरण, दान सौम्य कर्म से दूर न हों। बड़ों का आदर परस्पर प्रेम व दान की वृत्ती वाले बनकर हम सौम का रक्षण कर पावें। काम, क्रोध, लोभ, मोह शत्रु हमारे अन्दर स्थित न हों। हृदय में कामादि का अधिष्ठान न हो। शत्रुओं से हृदय शून्य कर आपके दर्शन योग्य बनावें।

वेद मन्त्र में यह प्रार्थना की गई है कि हम शुभ मार्ग से परे न हों। वह शुभ मार्ग क्या है ? यज्ञ अर्थात् परोपकार का मार्ग ही शुभ मार्ग है। यज्ञ से अभिप्राय द्रव्य यज्ञ, श्रेष्ठतम कर्म और परोपकार से है। वेद मन्त्र में दूसरी बातें यह कही गई हैं कि अदानशील हममे न ठहरे। इसका अभिप्राय यह भी है कि हममे अदानशीलता न हो।

परोपकार का अर्थ है दूसरों की भलाई। मनुष्य का धर्म है कि वह दूसरों की भलाई करे। मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों के काम आये। मनुष्य यदि शक्ति रखते हुए भी दूसरों के काम नहीं आता तो वह मनुष्य जीवन के लिए दूषण रूप है। मनुष्य अपने लिये तो जीता ही है, परन्तु उसके जीवन की सार्थकता इसमें है कि वह दूसरों के लिए कितना जीता है ? दूसरों के लिए व्यक्ति कितना जिया, इसी से इसके जीवन की उत्कृष्टता का पता चलता है। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए मनुष्य को अपेक्षित कर्म करने ही पड़ते हैं। अपने लिए तो मनुष्य उद्योग करता ही है, परन्तु दूसरों के लिए कितना प्रयत्न करता है यह विवेचनीय विषय है। दूसरों का उपकार करने वाले मनुष्य धन्य होते है। महर्षि दयानन्द ने क्या खूब कहा है –

संसार दुःख दलनेन सुभूषिता ये धन्या नरा बिहितकर्मपरोपकाराः।

संसारी जनों के दुःखों के दूर करने से सुभूषित, वेदविहित कर्मों से जो उपकार करने में लगें रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं।

जब हम मनुष्य को देखते हैं तो इस तथ्य पर पहुंचते हैं कि एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के सहयोग की आवश्यकता होती है। संसार में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसको दूसरे के सहयोग की आवश्यकता न पड़ी हो अथवा न पड़ती हो। बड़े–से–बड़े समर्थ व्यक्ति को भी दूसरे का सहयोग अपेक्षित होता है।

परोपकार से मनुष्य जीवन की शोभा और महिमा बढ़ती है। सच्चा परोपकारी सदा प्रसन्नचित्त रहता है। वह दूसरे का कार्य करके हर्ष की अनुभूति करता है। वह अपने अन्दर दिव्य प्रकाश अनुभव करता है सच्चा परोपकारी दूसरे का काम संवारकर सच्चा सुख प्राप्त करता है।

सच्चा परोपकारी जीवन में यश और सम्मान प्राप्त करता है। महान पुरूष संसार में सम्मान ही चाहते हैं। उपकृत उनका सदा सम्मान करते हैं।

अधमा धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः।

उत्तमा मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम्।।

निकृष्ट व्यक्ति धन की इच्छा करते हैं, मध्यम श्रेणी के व्यक्ति धन और मान दोनों चाहते हैं और उत्तम व्यक्ति केवल मान ही चाहते हैं। वास्तव में मान ही महापुरूषों का धन होता है।

परोपकारी मनुष्य जब दूसरे का उपकार करता है तो वह समाज में एक स्वस्थ प्रथा को स्थापित करता है। यह स्वस्थ प्रथा देखने और सुनने वाले को भी परोपकार की प्रेरणा देती है। इसी स्वस्थ प्रथा के सहारे मनुष्य समाज स्थिर है। मनुष्य तो मनुष्य है वह तो उपकार को समझता ही है, परन्तु पशु भी उपकार को समझते हैं। भास ने लिखा है –

तिर्यक्ग्योनयो□पि उपकृतमवगच्छति। **प्रतिमा 64 । 5**

पशु पक्षी भी उपकार को समझते हैं वे भी जानते है कि उन पर अमुक उपकार किया गया है।

परोपकार की बहुत महिमा गायी गई है। किसी ने क्या सुन्दर कहा है –

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कंकणेन।

विभाति कायः करूणाकुलानां परोकारेण न चन्दनेन।।

कानों की शोभा वेदादि शास्त्रों के सुनने से होती है, कुण्डल धारण करने से नहीं। हाथ की शोभा कक्डण से नहीं, दान से बढ़ती है। करूणा से व्याकुल पुरूषों का शरीर चन्दन लेपन से नहीं, परोपकार से ही शोभा पाता है।

कर्मफल सिद्धांत

ईश्वर की व्यवस्था

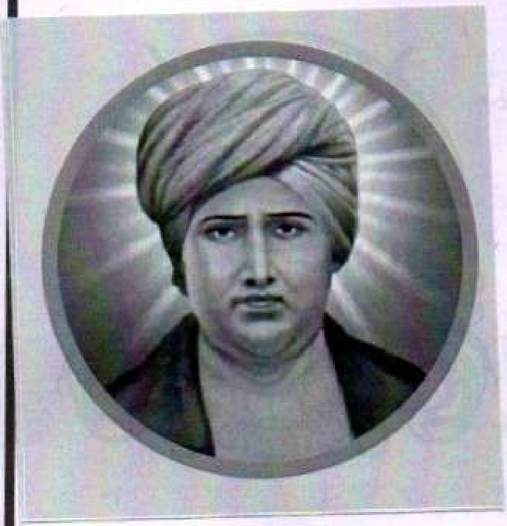

प्रसिद्ध विद्वान

दिवं.

गंगाप्रसाद उपाध्याय

प्रश्न – जब समस्त सृष्टि ईश्वर की व्यवस्था के आधीन है और हम सब भी सृष्टि के अंग हैं तो फिर सत्यासत्य कर्तव्याकर्तव्य, कर्म और भोग की विवेचना की उलझनों में क्यों पड़ना ? होगा तो वही जो ईश्वर की व्यवस्था के भीतर है।

उत्तर – ईश्वर की व्यवस्था जड़ और चेतन के लिए एक सी नहीं है, सृष्टि की जटिलतम समस्या यह है कि जड़ और चेतन में भेद किया जाये। ईश्वर की व्यवस्था जहां जड़ चीजों पर पूरा आधिपत्य रखती है वहां चेतन चीजों को अपने कर्म क्षेत्र में पूरी पूरी स्वतन्त्रता भी है। सृष्टि के निर्माण में चेतन शक्तियों का चेतन शक्तियों का पूरा–पूरा साझा है। नैसर्गिक शक्तियों का चेतन शक्तियां निर्वचन पूर्वक–प्रयोग किया करती हैं। चीटियों के चींटोहर, बया के घोंसले, भेड़ियों की मांदें और सहस्त्रों अन्य जीवों की बनाई हुई चीजें, यही बताती हैं कि चेतन जीव ईश्वर नियन्त्रित नियमों का निरन्तर विवेचनापूर्ण उपयोग किया करते हैं और सृष्टि में परिवर्तन किया करते हैं।

सभ्य जातियों के नगर, सड़कें आदि इस बात की सूचना देते हैं कि जिस सृष्टि में हम रहते हैं वह केवल ईश्वर निर्मित ही नहीं हैं उसमें मनुष्य तथा अन्य

प्राणियों का भी साझा है। बया जो घोसला बनाती है उसमें घोंसला निर्माण की कला चाहे कितनी ही स्वाभाविक और स्वतन्त्रता शून्य अथवा शिक्षानपेक्षित क्यों न हो उसकी सामग्री के जुटाने आदि में पक्षी को पर्याप्त निर्वाचन करना पड़ता है। अतः जीव की कर्म करने में स्वतन्त्रता सुरक्षित है। सृष्टि के प्रयोजन ही दो हैं। जीव का भोग और जीव का कर्म। सृष्टि इन दोनों प्रयोजनों के लिये सर्वथा उपयुक्त है। भोग का परिणाम है बौद्धिक विकास। उस विकास का प्रभाव पड़ता है कर्तव्यता के निर्वाचन पर। उससे उत्पन्न होते ही भोग पाता है। भोगों से उसकी बुद्धि का विकास होता है, उसी अनुसार यह निर्वाचन करके कर्तुम्, अकर्तुम् अन्यथा कर्तु की स्वतन्त्रता का प्रयोग करता है, हर कर्म पीछे से भोग उत्पन्न करता है। उस भोग से आगे का विकास होता है।

यह चक्र कभी बन्द नहीं होता, हम केवल इस चक्र से घबड़ाने या उस पर विश्वास न करने या उसकी ओर से ऑख मूंद लेने मात्र से इस चक्र से छुटकारा नहीं पा सकते। हॉ इस चक्र को समझकर यदि हम ठीक रीति से अपने कर्तव्यों का पालन करें तो अवश्य ही हमारी उन्नति हो सकती है। परिस्थितियॉ कितनी ही निश्चित क्यों न हों उस निश्चितता के भीतर भी जीव की स्वतन्त्रता की गुंजाइश है। जेल में कैदी पूर्ण रूप से कैदी है फिर भी कैदी को कैद में करने के लिये जो काम दिया जाता है उसके करने में वह अपना विवेक प्रयुक्त कर सकता है। अच्छा करने पर अधिकारी सन्तुष्ट रहते हैं। अन्यथा उनकी अप्रसन्नता होती है और कभी–कभी दण्ड भी प्राप्त होता है।

अतः सिद्ध है कि जेल का कैदी भी कर्म करने में स्वतन्त्र और भोग में परतन्त्र है। स्वतन्त्र और परतन्त्र की सीमाएं अवश्य भिन्न हैं और होनी भी चाहिये क्योंकि यह भी तो कर्मों का फल है। श्रेष्ठ पुरूषों को लोक में भी निकृष्ट लोगों की अपेक्षा अधिक स्वतन्त्रता रहती है। पुलिस चोर पर दृष्टि रखती है साह पर नहीं, ये सब मानवी कार्य नैसर्गिक नियमों का अनुकरण मात्र है।

महर्षि की लेखनी से

सन्यासी

जैसे अग्नि आप शुद्ध हुआ सबको शुद्ध करता है, वैसे सन्यासी लोग स्वयं पवित्र हुए सबको पवित्र करते हैं।

ऋ. 7 । 13 । 2

सत्योपदेश ही सन्यासियों का ब्रह्मयज्ञ है। ब्रह्म की उपासना देवयज्ञ है। विज्ञानियों की प्रतिष्ठा करना पितृयज्ञ है। मूर्खों को ज्ञान–दान, सब प्राणियों पर अनुग्रह और उन्हें पीड़ा न देना भूतयज्ञ है। सब मनुष्यों के उपकार के लिए भ्रमण करना, अभिमान शून्यता और सत्योपदेश करने से सब मनुष्यों का सत्कार–अनुष्ठान अतिथियज्ञ है।

– ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वर्णाश्रमविषयः

परमेश्वर से भिन्न किसी की उपासना न करे, न वेदविरूद्ध कुछ मानें, परमेश्वर के स्थान में सूक्ष्म वा स्थूल तथा जड़ और जीव को भी कभी न माने, परमेश्वर को सदा अपना स्वामी माने और आप सेवक बना रहे, वैसा ही उपदेश अन्य को भी किया करे।

– संस्कारविधिः, संन्यासप्रकरणम्

(सन्यासी) चाहे निन्दा हो चाहे प्रशंसा, चाहे मान हो चाहे अपमान, चाहे जीना हो चाहे मृत्यु, चाहे हानि हो चाहे लाभ, चाहे कोई प्रीति करे, चाहे वैर, बॉधे, चाहे अन्न पान, वस्त्र, स्थान न मिले वा मिले, चाहे शीत ऊष्ण कितना ही क्यों न हो, इत्यादि सबको सहने करे और अधर्म का खण्डन तथा धर्म का मण्डन सदा करता रहे, इससे परे उत्तम धर्म दूसरा किसी को न मानें।

– सत्यार्थप्रकाश, एकादशसमुल्लास

संस्कार

जिससे शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते है और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं, इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को उचित है।

– संस्कारविधिः

बोधकथा

मुझ-सा बुरा न कोय

मैं कथा कह रहा था करौल बाग के आर्य समाज में। एक सज्जन रात समय मुझे दूध पिलाने के लिए अपने घर ले गये। घर में जाकर बैठे ही थे कि बिजली फैल हो गई। अन्धकार हो गया। अब वे सज्जन लगे सरकार को कोसने–"कैसी सरकार है यह ! जबसे इनका राज्य हुआ, तबसे से कोई कार्य ठीक प्रकार से नहीं होता। अब देखो, बिजली ही चली गई।"

मैंने कहा – "राज्य को कोसने से कुछ बनेगा नहीं। आपके घर में कोई मोमबत्ती आदि होगी, उसे जला लीजिए, कार्य चल जायेगा।"

तब उन्होंने पुकारा – "ओ कुक्कू की माँ ! दियासलाई तो ला। देख मोमबत्ती कहाँ है ?

अब कुक्कू की माँ ने दियासलाई ढूँढ़नी आरम्भ की। अन्धेरे में इधर देखा, उधर देखा, कहीं भी उसे दियासलाई नहीं मिली। अन्ततः सिगरेट पीनेवाले एक सज्जन से दियासलाई ली गई। मोमबत्ती की खोज आरम्भ हुई। इस अलमारी में, उस अलमारी में, यहाँ–वहाँ। सलाईयाँ एक–एक करके घिसाई जा रही हैं, मोमबत्ती की खोज हो रही है, परन्तु मोमबत्ती है कि मिलने का नाम ही नहीं लेती। दियासलाई वाले ने कहा–"तीलियाँ तनिक देखकर खर्च कीजिये, ऐसा न हो कि मोमबत्ती मिले तो डिबिया में तीलियाँ समाप्त हो जाये।"

इस भाग–दौड़ में बिजली फिर आ गई, प्रकाश हो गया। वे सज्जन बैठे, फिर बोले – "राज्य का प्रबन्ध ही सारा खराब है। जिस विभाग को देखो, उसी में त्रुटि है। कितना समय इन लोगों ने नष्ट कर दिया।"

मैंने यह आलोचना सुनी तो हँसते हुए कहा – "राज्य का प्रबन्ध तो अच्छा है या बुरा परन्तु तुम अपने घर का प्रबन्ध तो देखो।" दियासलाई रखने का ठिकाना, न मोमबत्ती रखने का स्थान और कोसा जाता है राज्य को। राज्य क्या तुम्हारे घर का भी प्रबन्ध करेगा ?"

यह है हमारा स्वभाव ! देखनी चाहिये अपनी त्रुटि। हम दूसरों की त्रुटियों को ही देखते रहते हैं।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दिखया कोय।
मन जो अपना देखिया, मुझसे बुरा न कोय।।

अथ मनु महिमा

मन से मनु ने मनन सिखाया बिना दर्प कन्दर्प किया।
मौन मनस्वी मुनि ने जग को मानव दर्शन पूर्ण दिया।
मनु से मनसिज हार गया, मनु से ही मानव महामना,
मनु से मान्य मुनीश्वर सारे दिव्य मनीष वितान तना।।

मनु ने मनोयोग सिखलाया ताकि मिले भवमय भंजन,
मनु से पूरे हुए मनोरथ रत्न मिले जनमन रंजन।
मनु के मन्त्रों से ही मन्त्री नरपति मान्य बने हैं,
मनु की कर्मव्यवस्था से भू पर धन धान्य बने हैं।।

जो अनुसंधित हुआ तर्क से वही धर्म शरधनु हैं,
सम्प्रदाय में जलते जग तेरा उपाय तो मनु है।
मनु है मूल पुरूष सबका पर मनु का मूल मनुर्भव है।
ऋचा–ऋचा है प्रेम पताका जग की उन्नति संभव है।।

मनु को मान मान्य मानव दानव बनने से बचता था,
गुण कर्मों की कितनी सुन्दर अमर अल्पना रचता था।
अब तो मूक प्राणियों की ही कब्र तुम्हारे उदर बने,
मनु को भूल दनुजता के ये नग्न नाच के नगर बने।।

मनु के बिना कहां वेदों की महिमा मण्डित होती,
कैसे दुष्ट दानवों की दुष्कृतियाँ दण्डित होती।
मनु न होते कैसे नारी पूजित पंडित होती,
मनु न होते तो हाँ सचमुच गीता खण्डित होती।।

धर्म द्रोहियों, देशद्रोहियों नीचों की करतूतें काली,
जय में मनु में जाली रचना कितनी अधिक मिला डाली।
मनु को मूल रूप में मानव एक बार तो पढ़ लेना,
फिर चाहों तो चौराहे पर चढ़कर फांसी दे देना।।

कितने फुले फलें कई भीम धराशायी होंगे,
सद्गुण संस्कारों के जग में मनु के सभी शरण होगें।
मनु ने काल नाप डाला है, मनु के ये मन्वन्तर हैं,
मनोजयी मनु कालजयी के कोटि–कोटि संवत्सर हैं।।

जब तक है यह अवनी अम्बर गंगोत्री गिरिमाल हिमा।
जब तक है मानव तब तक क्यों होगी इति मनु की महिमा।।

– रमेशचन्द्र चौहान, इन्दौर

भारतीय परम्परा से दूर होते लोग ..

प्रायः अधिकांश व्यक्ति एक जनवरी को नये साल का स्वागत करने को आतुर रहते हैं, एक–दूसरे को हैप्पी न्यू ईयर कहते नहीं थकते, हर वर्ष नव वर्ष को यादगार बनाने के लिए कई दिनों पहले तैयारियॉ शुरू कर देते हैं। बढ़िया पाटियां, पब, डिस्को हाल, बड़े होस्टलों को पहले से बुक करवाकर शराब, मांस व अन्य ड्रग्स की भरपूर व्यवस्था करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। लड़कों के लिए लड़कियॉ, लड़कियों के लिए लड़के नशे में चूर डिस्को बार में डांस, सड़कों पर झूमते गाते नाचते हुड़दंगी नजर आते हैं, जो लड़की ऐसे माहौल से दूर रहना चाहती है उनको छेड़ते हुए ''निरंकुश वीर'' कहलाने में अपनी गरिमा समझते हैं, न समाज का डर, न संस्कारों की चिन्ता अनुशासन हीनता सभी तरफ अराजकता, पशुवत व्यवहार, मन में आये जो करें, ''जिन्दगी एक सफर है सुहाना, यहां कल क्या हो किसने जाना'' के गीत को अपनी नये भारत की सोच को अपने अर्थों में जीना, कल की चिन्ता छोड़ो, कल की बात पुरानी, नये दौर में लिखेगें हम नई प्रेम कहानी हम हैं हिन्दुस्तानी'' के अनुसार हमारे पूर्वज दकियानूसी विचारों में जी रहे थे। पर हम तो आधुनिक भारत में जी रहे हैं। इसलिए अतिशीघ्र इस देश को 22 वीं सदी में पहुंचाकर इसकी गरिमा संस्कार सदाचार व सद्व्यवहार को भुलाकर आधुनिकता के नाम पर उन्मुक्त जीवन शैली के द्वारा जितना जल्दी हो सके रसातल को पहुंचाना है, और फिर नये साल का जश्न मनाना है। बस यही तो है नया साल।

बच्चों के दिमाग में यह बात पैदा करना की शांताक्लोज आयेगा और हमें टॉफी उपहार में देगा, ऐसा काल्पनिक शान्ताक्लोज के द्वारा उपहार बांटकर बच्चों के कोमल मस्तिष्क में लालच के भाव पैदा कर अन्धविश्वास को ठुसना यही तो तो है नये साल का जश्न।

रावण (विदेशी विकृत संस्कृति) ने सीता (भारतीय संस्कृति) का हरण किया था, उसको भारत के संस्कारों ने धराशायी किया आज विदेशी संस्कृति भारतीय

संस्कृति को हरण नहीं कर रही है, अपितु हम स्वयं ही अपनी संस्कृति को मिटाने के लिए आत्म समर्पण कर रहे हैं।

1000 साल की गुलामी में जोर जबरदस्ती के बाद भी हमारा धार्मिक सामाजिक चारित्रिक पतन नहीं हुआ। जितना आजादी के सालों में हुआ है, हम विदेशी मानसिक गुलामी की दास्तां को स्वीकार करते हुए, सह जीवन पद्धति और समलैंगिक विकृति जैसे कुसंस्कारों की और अग्रसर होते हुए अपने सुसंस्कारों को पैरों तले रौंधते हुए स्वतन्त्रता के नाम पर अपने आप को धन्य समझने लगे है।

लड़कियों के छोटे व शरीर से चिपके कपड़े पहनना, बलात्कार व बलात्कार के बाद हत्या, ये संस्कार कहां से आये ? पुरूषों में मानसिक विकृति पैदा करना किसकी देन है ? गर्लफ्रेंड, बॉयफ्रेंड के साथ एकान्त में खुले विचारों के नाम पर व्यभिचार करना, यह किसकी देन है ऐसे अवसर पर वहां जो होता है। वहां क्या सिर्फ पुरूष दोषी होते हैं, यह एकान्त सेवन की सीख किसकी देन है ? विदेशी संस्कारों को भारत पर थोपने के लिए प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा धन के बल पर इतना प्रचारित किया जा रहा है, कि ऐसे शर्मनाक मानबिन्दुओं को सहज मानकर युवाओं को भटकाने का यह प्रयास किसकी देन है ? छोटे बड़े शहरों से निकल कर ग्रामीण क्षेत्रों में भी यह विकृति पहुंचने लगी है, यह किसकी देन है ? एक कवि ने बहुत सुन्दर कहा "बरबाद चमन के करने को जब एक ही उल्लु काफी है, हर साख पे उल्लु बैठा है, अंजाम गुलिस्तां क्या होगा ?" हमारी भाषा को पैरों तले रौंधने में अंग्रेजियत की मानसिकता वाले राष्ट्रभक्त नेताओं व फिल्मी दुनिया के लोगों ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी है, वोट मांगते हिन्दी में और बहस से लगता ही नहीं कि यह राष्ट्रभाषा हिन्दी वाली सांसद है, फिल्म वाले हिन्दी फिल्मों में आधी अधुरी हिन्दी का प्रयोग करते हैं और साक्षात्कार या उत्सवी मंचों पर अंग्रेजी में जुगाली करते रहते हैं। मालवा में एक कहावत है – माल खाये माटी (पति) के और गीत गाये बिरा (भाई) के।

ये कुछ अंग्रेजी द लोग नमक अन्न भारत का खाते हैं, भारत की मिट्टी में पले, बड़े रंगों में भारत का खून पर गीत गायेगें अंग्रेजी के ऐसे पढ़े लिखे समझदार ना समझों की गिनती भी देश की संख्या के मान से कोई ज्यादा नहीं है, पर लगे हुए हैं मुन्ना भाई।

सारी दुनिया में छोटे बड़े कोई 204 देश हैं। सभी की अपनी–अपनी भाषा, अपनी–अपनी संस्कृति है, सभी देशों व प्रदेशों के अपने–अपने नव वर्ष हैं। हमारे भारत में भी छत्तीस तरह के नव वर्ष मनाये जाते हैं, पर मुख्य रूप से चैत्र सुदि एकम या गुड़ी पड़वा भारत का नव वर्ष है। इसी दिन नव संवत्सर प्रारंभ होता है दिन, महिना, समय की गणना निहीत है, इसलिए इसे संवत्सर कहते हैं, सृष्टिक्रम के अनुसार ब्रह्माजी ने इसी दिन सृष्टि की रचना आरम्भ की थी, सत्युग का प्रारंभ भी इसी दिन माना जाता है, मालवा प्रदेश के सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन से अपना संवत् प्रारंभ किया था। इसीलिए इसे मनाने के लिए त्याग के प्रतीक पीले वस्त्र धारण करना, उगते सूर्य को अर्ध्य देना, प्रातःकाल वायु शुद्धि के लिए देशी गाय के शुद्ध घी से हवन करना, मानसिक शान्ति के लिए मन्त्र जाप व पूजन करना देव दर्शन करना, अपने से बड़ों के चरणों में झुककर प्रणाम कर आशीर्वाद लेना शामिल है और ये सारे कार्य शालिनता लिए हुए होते हैं। यह संस्कृति सभ्य समाज में संस्कार युक्त जीवनशैली सिखने वाले इन तरीकों से ओत प्रोत है।

असल में हम नकलची ज्यादा होते जा रहे है और सारी दुनिया एक है, इस नाम पर अपने संस्कार खोते जा रहे हैं। देखादेखी मदर डे, फादर डे,, टीचर डे, वेलेनटाईन डे और पता नहीं क्या–क्या डे मनाते हैं। जबकि हमारे यहां इन डे को मनाने का कोई औचित्य ही नहीं है, हमारे यहां तो सूर्य की पहली किरण के साथ प्रतिदिन ही यह डे मनाये जाने का विधान है।

इसी तरह नया साल मनाने की भी हमने नकल शुरू कर दी, क्या है नया साल ? देखादेखी हुड़दंगी बनते जा रहे हैं। यदि बुद्धि को थोड़ा सा भी जोर देकर विचार करेगें, तो पता चलेगा कि हमारे जीवन का प्रतिदिन ही नहीं प्रतिक्षण ही नया साल है क्योंकि जो पल निकल गया वह पल जीवन में कभी भी नहीं आयेगा।

जो ये नववर्ष है केवल समय को मापने का एक तरीका है, यदि यह तिथि नहीं होती तो कितना समय निकल गया, कितना बाकी है, इसकी संख्या कैसे मालूम पड़ती, हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों का विज्ञान आज के विज्ञान से कहीं अधिक विकसित था।

उनकी काल गणना का आज भी कोई तोड़ नहीं है, तिथि, वार, ग्रह, नक्षत्र, महिने आदि का समयबद्ध निर्माण कितना आचश्चर्यजनक है। केवल अमावस्या को ही सूर्य ग्रहण व पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण होता है। 12 राशि पर सूर्य की चाल, सवा दिन में एक राशि पर चन्द्रमा और समयबद्ध तरीके से सारे ग्रह नक्षत्रों की चाल लाखों वर्ष पहले ही दुनिया को बता दी थी।

हमारे त्यौहार, तिथियों से आते हैं, कि तारीखों से आते हैं ? रामनवमी, रक्षाबन्धन, कृष्ण जन्माष्टमी, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली, अमावस्या, पूर्णिमा, इनकी कोई तारीख निश्चित है क्या ? समुद्र में ज्वार भाटा पूर्णिमा और अमावस्या को ही आता है, क्या इनकी तारीख भी निश्चित है ? यदि तारीख ही सही है है तो फिर ज्वार भाटा तारीख से ही आना चाहिए। 30 तारीख को अमावस्या, 15 तारीख को पूर्णिमा आना चाहिए, हम त्यौहारों को भी तारीख से पहचानने लगे हैं, यदि यह सब तारीख से नहीं है तो फिर हम तारीखों के पीछे क्यों पगलाये जा रहे हैं ?

जब सामान्य हवा चलती है तो उसमें हलके पुलके सामान उड़ते हैं, हवा और तेज होती है तो और बड़ा सामान उड़ता है और जब अंधड़ चलता है तो इसमें बड़े–बड़े विद्वान, मठाधीश, भारतीय संस्कृति के रक्षक व ज्योतिषी भी उड़ने लगे हैं, अपने ज्योतिष ज्ञान का महत्व हिन्दी महिनों से है उसकी जगह अंग्रेजी महीनों से इस महीनें कितने रविवार, सोमवार, मंगलवार आयेगें तो ये घट जायेगा वो बढ़ जायेगा से फलित ज्योतिष की गणना करने लगें। इस आंधी में कुछ सिरफिरे लोग ही बचे हैं, जो चट्टान की जगह अपनी मजबूत है, जो उड़ गये हैं वे इन अड़े हुवो को मूर्ख समझकर अपने दिमागी दिवालियेपन का परिचय दे रहे हैं। पर अभी पिछले कुछ वर्षों से आशा की किरण दिखाई देने लगी है, कुछ संस्थाएँ चैत्र वर्ष प्रतिपदा को नववर्ष के रूप में अच्छे भव्य तरीके से मनाने लगी है।

अपने घर की रूखी–सुखी खाकर इतराना गर्व की बात तो हो सकती है, पर दूसरे की झूठी पत्तल चाटकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करने वाले को हमारा सलाम।

– रमेशचन्द्र शर्मा (इकलेरा वाले) आर्य समाज, कानड़

एक शिक्षादायक घटना

राजा भोज बड़े उदार और दानी थे। एक बार की बात है कि एक गरीब विद्वान कवि चोर ने राजा के घर चोरी करने की ठानी। रात में जब राजा सोया हुआ था, तो उसके पलंग के चार पांवों के नीचे चार सोने की ईंटें रखी हुई थी। विद्वान कवि चोर ने सोचा कि किसी प्रकार इन ईंटों को चुरा लिया जाए। विद्वान को सदा पाप से भय वा संकोच होता है। इस कारण वह सारी रात इसी उधेड़ बुन में लगा रहा कि इन सोने की ईंटों को कैसे उठाया जाये ?

सोचते–सोचते चार बज गये। राजा भोज का यह नियम था कि सवेरे उठकर वे संस्कृत का एक श्लोक बनाया करते थे। उस दिन उन्होंने श्लोक के तीन चरण तो बना लिये, पर चौथा चरण बनाने में उलझ गये। तीन चरण इस प्रकार थे –

''चेतोहरा युवतयः सुहृदोऽनुकूलाः,
सद् बान्धवाः प्रणयगर्भगिरश्च भृत्याः
गर्जन्ति दन्तिनिवहाश्चपलास्तुरंगः

जब राजा ने ये तीन चरण बना लिये और चौथा चरण न बन पड़ा, तो नीचे छिपे हुए चोर कवि ने चौथा चरण बोलकर इस चरण को ऐसे पूरा किया –

''सम्मिलिने नयनयोर्न हि किंचिदस्ति।''

पूरे श्लोक का भाव यह है कि राजा गर्व से कहता है ''मेरे रनिवास में अनेक मन को मोहित करने वाली युवतियां है, अनुकूल मित्र हैं, उत्तम संबंधी व बन्धु–बान्धव हैं, मधुर बोलने वाले नौकर–चाकर हैं, हाथियों के झुण्ड गरजते रहते हैं, चंचल घोड़े भी हैं। अन्तिम पंक्ति राजा को सूझ न आई। तब चोर कवि ने नीचे से पुकारा, ऑखों को बन्द कर लेने पर, मौत होने पर कुछ भी बाकी नहीं रह जाएगा।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जो कुछ हमें धन, सन्तान, अधिकार आदि भोग्य पदार्थ मिले हैं, वे सब प्रभु की कृपा से प्राप्त होते हैं।

राजा भोज के समय इतनी विद्या फैली हुई थी कि चोर भी कवि हुआ करते थे। उसने राजा को यह उपदेश दिया कि यह सब ठाठ बाट सदा रहने वाला नहीं। ऑखें बन्द होने पर सब यहीं पड़ा रह जाएगा। केवल पाप पुण्य साथ जाएंगें। सेठजी, की फिक्र थी कि एक–एक के दस–दस कीजिए। मौत आ पहुंची कि साहब जान वापस कीजिये। इसलिए हमें इस जीवन के हर एक वस्तु का त्याग भाव से यह समझकर कि ये सब पदार्थ भगवान की दी हुई धरोहर के रूप में दिये गये हैं, उपभोग करना चाहिए।

महर्षि दयानंद और आर्य समाज के संबंध में प्रमुख व्यक्तियों, विचारकों की सम्मतियां

राधारमण : पूर्व मुख्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

आर्य समाज की स्थापना एक ऐसे तेजस्वी महापुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने की थी जो ज्ञान–विज्ञान और दैवी तेज से विभूषित थे। उनके आदर्शों पर स्थापित आर्य समाज ने आजादी के संघर्ष तथा समाज को एक नया मोड़ देने और उसे एक नया बल और तेज पैदा करने की दिशा में बड़ा योगदान किया था। आजादी के बाद भी समाज की रूढ़ियों से विमुक्त करने और उसे सशक्त करने की दिशा में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

मैं आशा करता हूं आर्य समाज स्वतन्त्र भारत में नव शक्ति और एक नये समाज के निर्माण की दिशा में अपना भरपूर योगदान कर सकेगा।

हीरासिंग : पूर्व कार्यकारी पार्षद (विकास), दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने देश में व्यास अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों के विरूद्ध कठोर संघर्ष करते हुए जिन परिष्कृत सिद्धान्तों, उच्च आदर्शों एवं उत्कृष्ट जीवन मूल्यों का प्रतिपादन किया, आज भी समाज को उनकी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी उस समय थी। निःसन्देह आर्य समाज के विचारकों, प्रचारकों एवं विद्वानों ने उन सिद्धान्तों को लोकग्राहय, लोक–व्यापक एवं लोक प्रिय बनाने के लिए कठोर प्रयास किए हैं, लेकिन फिर भी कुछ ऐसी कुरीतियों एवं अन्धविश्वासों से समाज ग्रस्त है जिनके उन्मूलन के लिए और अधिक प्रयास किए जाने अपेक्षित है। अतीत की उपलब्धियां इस बात की साक्षी हैं कि आर्य समाज भविष्य में भी निरन्तर संघर्षशील रहेगा और अन्ततोगत्वा सफलता प्राप्त करेगा।

हरिदेव जोशी : पूर्व मुख्यमन्त्री, राजस्थान (जयपुर आर्य समाज)

आर्य समाज ने भारत के सम्पूर्ण सामाजिक जीवन में एक नई क्रान्ति को जन्म दिया तथा सैकड़ों हजारों ऐसे कार्यकर्ता पैदा किये जिन्होंने देश की आजादी के संघर्ष में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बंशीलाल : पूर्व रक्षामन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

आर्य समाज के पिछले सौ सालों का इतिहास सामाजिक जागृति के अभियान का

इतिहास है। देश में फैली सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध आवाज बुलन्द करने, ऊँच नींच का भेद भाव मिटाने और हरिजनोद्धार के लिए आर्य समाज ने जो प्रयत्न किए वे सुनहरी अक्षरों में लिखने योग्य हैं। विदेशी जुए को उतार फैंकने के लिए स्वतन्त्रता, आन्दोलन में भी आर्य समाज ने सराहनीय भूमिका निभाई है।

महान समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। उनका सादा एवं साधनामय जीवन और उनके ऊँचे आदर्श देशवासियों के लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं। आर्य समाज शताब्दी समारोह के अवसर पर मैं स्वामी दयानन्द जी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं और उम्मीद करता हूं कि आर्य समाज एक बार फिर समाज में फैली बुराइयों को जड़ से उखाड़ने और देशवासियों में राष्ट्रीय एकता के संचार के लिए जागृति का शंख फूँकेगा।

स्व. प्रकाशचन्द्र सेठी : पूर्व केन्द्रीय रसायन एवं उर्वरक मन्त्री, भारत सरकार

राष्ट्रीय नवजागरण में महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का योगदान स्वर्णाक्षरों में अंकित है। सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

रामनिवास मिर्धा : पूर्व आपूर्ति एवं पुनर्वास मन्त्री, नई दिल्ली

आर्य समाज का हमारे देश के समाज की कायापलट करने में एक गौरवान्वित स्थान रहा है। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज ने हमारी पुरानी संस्कृति को जागृत किया एवं उसको वर्तमान जीवन पद्धति का अंग बनाने का प्रयास किया।

स्व. इन्द्रकुमार गुजराल : पूर्व प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

आर्य समाज अपने गौरवपूर्ण अस्तित्व के 100 वर्ष पूरे कर चुका है। यह उसके तथा देश के लिए गौरव की बात है। समाज में व्याप्त छुआछूत, जाति भेद जैसी बुराइयॉ तथा धर्म के नाम पर होने वाले अनाचार को दूर करके वेद प्रणीत धर्म की पुनः स्थापना के उद्देश्य से महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज ने शिक्षा, अस्पृश्यता उन्मूलन, नारी जागरण और हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में जो कार्य किया है, उसकी महत्ता सर्वविदित है। आज उन्हीं उद्देश्यों को फिर से कार्यान्वित करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

एम. चन्ना रेड्डी : पूर्व राज्यपाल, राजभवन, लखनऊ

मूल वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा तथा हमारी जाति में समय के साथ–साथ प्रविष्ट

तमाम कुरीतियों, अन्धविश्वासों एवं जड़ता के विपरीत आर्य समाज ने प्रशंसनीय योगदान किया है तथा आशा है कि वह स्वयं किन्हीं परिस्थितियों में न बन्धकर, उस मूल अक्षय कोष से, राष्ट्र तथा जाति के जीवन को सिंचित करता रहेगा जो कालान्तर में अनेक नामों और रूपों में अपने को प्रस्फुटित करता रहता है।

स्व. जगजीवनराम : पूर्व कृषि तथा सिंचाई मन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

आर्य समाज का समाज सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान है। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों, आदर्शों और उपदेशों का प्रचार आर्य समाज करता रहता है, इससे जनता में समानता पर आधारित जाति–पांति विहीन समाजवादी समाज के निर्माण की भावना उद्बोधित होने में सहायता मिलती है।

स्व. महात्मा आनन्द स्वामीजी का सन्देश

आर्य जगत में एक नया मोड़ लाने की आवश्यकता है। पिछले एक सौ वर्षों में भवन निर्माण का कार्य थोड़ा बहुत हो गया है, परन्तु चरित्र निर्माण व वेद प्रचार का कार्य कुछ ढीला पड़ गया है। जिस विचार के प्रचार करने वाले नहीं होते वह विचार फैलते नहीं हैं। यह एक स्वाभाविक नियम है। अतः स्वाध्यायशील जिनके शरीर में शक्ति है और महर्षि के मिशन को पूरा करने की अभिलाषा है, वे अब कार्यक्षेत्र में वानप्रस्थ या सन्यासी के रूप में निकल पड़े।

स्थान–स्थान पर अष्टांग योग केन्द्र स्थापित करके आत्म दर्शन के पिपासुओं की शुभकामना पूरी की जाये। आज योग के नाम पर दुकानदारी बहुत चल पड़ी है। जिससे योग बदनाम हो रहा है। दुकानदारी को बन्द करने और साधक और साधिकाओं को प्रसन्न करने के लिए यह पग उठाने आवश्यक हैं।

बाल–विद्या मन्दिर स्थान–स्थान पर खुल जाने चाहिएँ। एक और अत्यन्त आवश्यक कार्य यह होना चाहिये कि आज की नई पीढ़ी आर्य समाज के महान कार्यों को नहीं जानती। आर्य समाज ने जो महान कार्य किये हैं उनका उल्लेख एक पुस्तक में होना चाहिए।

बुद्धप्रिय मौर्य : पूर्व उद्योग राज्य मन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश में व्याप्त धार्मिक अन्धविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों को दूर करके भारत के जनजागरण में नई क्रान्ति को जन्म दिया और हजारों कार्यकर्ता पैदा किये जिन्होंने संघर्ष कर देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

प्रचार - प्रसार

प्रान्तीय सभा क्षेत्र में प्रचार प्रसार की गतिविधियां निरन्तर उत्साह जनक हो रही हैं।

अनुकरणीय प्रयास – इन्दौर शहर में नवयुवकों ने आर्य पर्व समिति का गठन किया। इसमें शिक्षित युवा वर्ग बड़ी संख्या में जुड़ कर आर्य पर्वों को भव्यता प्रदान कर उत्साह से मना रहे हैं। आर्य समाज सत्संगों में भी रोचकता और संख्या वृद्धि के लिए प्रयास कर रहे हैं। एक योजना के अंतर्गत नगर की सभी आर्य समाजे मिलकर प्रमुख 5 पर्व अलग अलग समाजों के अन्तर्गत मनाते हैं। इससे नगर के अलग अलग क्षेत्रों में प्रचार भी होता है और सभी समाजों के सदस्यों की उपस्थिति भी बड़ी मात्रा में हो जाती हैं।

ये पर्व है श्रावणी, जन्माष्टमी, ऋषि निर्वाण दिवस, ऋषि बोधोत्सव, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, आर्य समाज स्थापना दिवस। इस प्रकार की योजना से उत्साह जनक वातावरण निर्मित हो रहा हैं।

दक्षदेव गौड़
उपप्रधान इन्दौर संभाग

सभा से सम्बन्धित अनेक समाजों ने आर्य समाज स्थापना दिवस, महर्षि दयानंद जन्मोत्सव वृहद् रूप में मनाया। इस अवसर पर यज्ञ, प्रभात फेरी और व्याख्यानों का आयोजन किया गया। व्याख्यान में स्थानीय वक्ताओं, पुरोहितों के अतिरिक्त बाहर से भी विद्वानों को आमन्त्रित कर व्याख्यान आयोजित किए गए।

सभा के प्रचारक भजनोपदेशक श्री आचार्य विश्वामित्र, श्री सुरेश आर्य, श्री दिलीप आर्य भी समय समय पर विभिन्न स्थानों में प्रचार कार्य हेतु उपलब्ध रहे।

महर्षि दयानंद कन्या गुरुकुल मोहन बड़ोदिया द्वारा सराहनीय प्रचार कार्य

गुरूकुल मोहन बड़ोदिया की आचार्या व कन्याओं द्वारा मोहन बड़ोदिया नगर में आर्य समाज स्थापना दिवस पर नगर के सम्भ्रान्त नागरिको के सहयोग से प्रभात फेरी निकाली। प्रभात फेरी में वाहन पर सुसज्जित यज्ञ वेदी पर यज्ञ करते जयघोष करते हुए निकाली इसमें नगर के बड़ी संख्या में स्त्री पुरूषों ने भाग लिया।

मंदसौर – जिले के गरोठ में सार्वजनिक स्थल पर 21 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्य समाज के तत्वाधान में यह आयोजन वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर किया गया। गुरूकुल की आचार्या सुश्री प्रज्ञा वेदालंकार के ब्रह्मत्व में सम्पादित यज्ञ में गुरूकुल की कन्याओं द्वारा मन्त्रोच्चार किया गया। वर्ष प्रतिपदा आर्य समाज स्थापना दिवस पर सुश्री प्रज्ञा वेदालंकार के सारगर्भित प्रवचनों की प्रस्तुति का नगर वासियों पर बहुत प्रभाव हुआ। बड़ी मात्रा में सहयोग राशि प्रदान की वही से दो कन्याओं को प्रवेश दिलवाने की भी घोषणा की। व्यवस्था की दृष्टि से भरत आर्य भी साथ में सहयोगी रहें हैं।

गुना – मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम चन्द्र जी के जन्मोत्सव पर गुरूकुल मोहन बड़ोदिया की कन्याओं को आमन्त्रित किया गया। दिनांक 17/04/24 को सुश्री प्रज्ञा वेदालंकार और सहयोगी भरत आर्य कन्याओं के साथ गुना पहुंचे। आर्य समाज भवन में 11 कुंडीय यज्ञ की व्यवस्था की थी पूरा कक्ष व प्रांगण धर्म प्रेमी श्रद्धालुओं से भरा हुआ था। वर्षो बाद इस प्रकार का उत्साह देखा गया। आचार्या प्रज्ञा वेदालंकार यज्ञ की ब्रह्मा थी कन्याओं ने मंत्र पाठ किया। इसके पश्चात् सुश्री प्रज्ञा ने वेद और भगवान श्री राम के जन्म पर प्रकाश डालते हुए वेदों के महत्व पर प्रवचन किया।

कार्यक्रम का बहुत अच्छा प्रभाव जन सामान्य पर हुआ। गुरूकुल के प्रति एक बड़ा अपनत्व हुआ आस्था बढ़ी। आयोजक बहुत प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे थे।

अन्नपूर्णा योजना के लिए उसी समय 6 सदस्यों ने प्रत्येक 11000/–रूपयों की घोषणा

की इस अवसर पर श्री विष्णुप्रसाद जी पंचोली (प्रधान) श्री हरिदत्त जी शर्मा (मंत्री) श्री श्रीधर जी शर्मा (कोषाध्यंक्ष प्रान्तीय सभा) श्री विनय जी शास्त्री, श्री तुलसीदास जी दूबे, श्री प्रमोद जी सोनी, श्री मनोज जी सोनी, श्री आशीष जी सक्सेना कार्यक्रम के विशेष संयोजक रहे।

गुरूकुल की छात्राओं को पुनः सुयश

विगत वर्ष कक्षा आठवी की बोर्ड परीक्षा में गुरूकुल की सभी छात्राए उत्तीर्ण हुई थी। इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। सभी छात्राएं विशेष योग्यता और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हैं। इस वर्ष कक्षा 10 वीं तक की मान्यता शिक्षा बोर्ड से प्राप्त हो जावेगीं सभी आवश्यक कार्यवाही पूर्ण कर दी गई हैं।

गुरूकुल में शासन द्वारा मान्य शिक्षा की भी 10 वीं तक व्यवस्था हैं। योग, प्राणायाम, व्यायाम, संध्या यज्ञ आर्ष (सनातन वैदिक) पद्धति पर शिक्षा के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, संभाषण एवं कम्प्यूटर आदि की व्यवस्था भी सम्मिलित हैं।

स्थान सीमित है – साक्षात्कार में उत्तीर्ण छात्राओं को ही प्रवेश दिया जाता हैं।

उज्जैन संभाग संभागीय सम्मेलन सम्पन्न

उज्जैन संभाग का कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न हुआ। संभाग को दो हिस्सों में विभाजित किया गया था। इसलिए उज्जैन संभाग के आधे क्षेत्र की यह बैठक थी। इस अवसर पर संगठन वृद्धि, सत्संग व्यवस्था, आर्य समाज के नियम उपनियमों की जानकारी प्रदान की गई। लगभग 125 सदस्यों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री प्रकाश जी आर्य उपप्रधान श्री लक्ष्मीनारायण जी पाटीदार, श्री राजेन्द्र जी व्यास, श्री ललित जी नागर, श्री वेदप्रकाश जी आर्य, एवं विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

महर्षि दयानंद कन्या गुरुकुल मोहन बड़ोदिया हेतु अपील

गुरूकुल की लोकप्रियता और उपयोगिता में निरन्तर प्रगति हो रही है। स्थानीय क्षेत्र के अतिरिक्त प्रान्त के अन्य स्थानों पर गुरूकुल के द्वारा प्रचार किया जा रहा हैं। कन्याओं के मंत्रों की प्रस्तुति और वैदिक धर्म प्रचार से समाज में एक अच्छा संदेश जा रहा हैं। इसीका परिणाम हैं इस सत्र में अभी तक 30 छात्राओ के आवेदन प्रवेश हेतु प्राप्त हो चुके हैं। आगे भी अनेक पालकों की ओर से जानकारी प्राप्त की जा रही हैं। इस हेतु तत्काल आवास व्यवस्था में निर्माण किया जाना आवश्यक हुआ है इस हेतु आर्थिक व आवश्यक संसाधनों का विस्तार सहयोग हेतु आर्य जनों से निवेदन किया जा रहा हैं।

अन्नपूर्णा योजना के सहयोगी बने

अन्नपूर्णा योजना गुरूकुल की कन्याओं के स्थायी भोजन की व्यवस्था की योजना हैं। इसमें कम से कम 11000/– ग्यारह हजार रूपया दानी महानुभावों से प्राप्त होता है उसे बैक में स्थायी जमा (FD) कर दिया जाता हैं। आर्थिक रूप से गुरूकुल को कोई समस्या न रहे इस प्रयोजन से यह योजना प्रारंभ की गई। गुरूकुल को दिए दान राशि पर आयकर विभाग की धारा 80 जी के अनुसार छूट प्राप्त हैं। कृपया आप भी सहयोगी बनें।

अन्नपूर्णा योजना के सहयोगी महानुभाव

क्रं.	नाम	राशि
174	माता सुनन्दा जी वानप्रस्थी जोधपुर	11000/–
175	श्रीमती मीना गौरीशंकर जी सोनी जोधपुर	11000/–
176	दिवंगत भगवान दास जी सोनी जोधपुर	11000/–
177	दिवंगत बद्री प्रसाद जी सोनी जोधपुर	11000/–
178	श्रीमती पुष्पा भरत कुमार जी सोनी पाटन गुजरात	11000/–
179	श्री रामकृष्ण जी आर्य टिगरिया	11000/–
180	श्री आर्य श्रीधर जी गोस्वामी महू	11000/–
181	श्री दिपक जी आर्य गुना	11000/–
182	श्री घनश्याम जी शर्मा गुना	11000/–
183	श्रीमती बिन्दु जी शास्त्री गुना	11000/–
184	श्रीमती मंजुला जी शास्त्री गुना	11000/–
185	श्री दिपक जी गोयल गुना	11000/–
186	श्री अंकुर जी दुषाज गुना	11000/–

क्रमशः

सभी दानदाता सहयोगीयों को गुरूकुल परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद

कृपया अपना सात्विक दान देकर गुरुकुल के सहयोगी बनें।

आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के अन्तर्गत आदेश संख्या 10136/2019-20 में 50 प्रतिशत छूट हेतु मान्य।

आर्य वीरांगना शिविर

महर्षि दयानन्द कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया में दिनांक 8 मई से 12 मई 2024 तक पांच दिवसीय आवासीय आर्य वीरागंना शिविर का आयोजन किया गया हैं। शिविर में 12 वर्ष से 20 वर्ष तक की छात्राएं भाग ले सकेगीं। शिविर प्रशिक्षण हेतु गुरूकुल की आचार्या व सहयोगी शिक्षिकाओं के अतिरिक्त बाहर से प्रशिक्षिका भी आ रही हैं।

अपनी बालिकाओं को सनातन संस्कृति के संस्कारों से परिचित करवाने, उत्तम दिनचर्या व व्यवहार, शारिरिक व आत्मिक ज्ञान प्रशिक्षण हेतु अवश्य भेजें। शिविर में भाग लेने हेतु शिविरार्थी 5 मई तक अपना रजिस्ट्रेशन करवा लेवें।

नोट

शिविरार्थी अपने साथ पेन, डायरी,
ओढ़ने बिछाने का साधन साथ लावें।

सम्पर्क

प्रकाश आर्य	ऋचा शास्त्री	प्रज्ञा वेदालंकार	भरत आर्य
9826655117	9634565072	6267468984	7828966977

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

[illegible] सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी [illegible]

॥ ओ३म् ॥
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ▪ पढ़ाना और सुनना ▪ सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म ज्ञ एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-23

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, प्रकाश आर्य द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित । संपादक - अतुल वर्मा, भोपाल

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062